International Online Multidisciplinary Journal
Review of Research
Save Tree, Save Paper, Save World
ISSN No : 2249-894X
Impact Factor 2.1002 (UIF) [Yr.2013]
3.1402 (UIF) [Yr.2014]

ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 4 | Jan - 2016

# वैश्वीकरण, भाषा संदर्भ और साहित्य अनुसंधान

**डॉ. जयश्री शिंदे**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर।

*प्रस्तावना*

**"कोई भी आन्दोलन सफल बनाने के लिए समाचार पत्र की आवश्यकता होती है।**

**जिस किसी भी आंदोलन का समाचार पत्र न रहा तो उसकी स्थिती दुटे हुए पर के परिदे जैसी होती है।**

**(डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर)**

**वैश्वीकरण ग्लोमार्किटायझेशन (Glomarketti zation) है । अर्थात पूरी दुनिया को एक मंडी के बाजार में तब्दील करना है और इसके पीछे पूँजीवादी साम्राज्यवाद ताकत है। इसका मतलब वैश्वीकरण पूंजीवादी व्यवस्था का अत्यन्त आधुनिक एवं विराट रूप है। इस मुक्त व्यापार व्यवस्था और उस से उद्भूत उपभोक्तावादी संस्कृति। इसका अर्थ यह है कि सभी क्षेत्र में इसके प्रभाव का वर्चस्व। खुली अर्थव्यवस्था का नेतृत्व अमेरिका कर रहा है। विकसनशील देश और विकसित हो रहे है, गरीब देश और निचले पायदान पर आ रहे है। पूरी व्यवस्था साम्राज्यवाद को बढ़ावा देने की है वैश्वीकरण की इस अर्थनीति को भारत ने स्वीकार किया है 24 जुलाई 1991 को नरसिंह राव सरकार ने संसद में नया केन्द्रीय बजेट पेश किया था जिसमें उदारीकरण (लिब्र लायझेशन Liberalisation) पर अधिष्ठित नई आर्थिक नीति की खुली घोषणा हुई थी। भारत में वैश्वीकरण की**

शुरूआत इसी घटना से हुई थी। इस आर्थिक आजादी का मतलब है भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बजार के साथ जुडते चले जाना।

हिन्दी साहित्यकारों ने वैश्वीकरण, बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति के वर्चस्व को बखूबी पहचाना है। इसलिए वर्तमान साहित्य लेखन में बाजारवाद का विरोध प्रखरता से दर्ज किया है विश्व के मुक्त बाजार में नैतिकता बुलबुले की तरह है। वैश्वीकरण में मनुष्य का लक्ष्य बना दिया गया बाजार। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विश्वनीड नहीं चाहती। वे विश्व बाजार चाहती है जिसमें अवैध मुनाफा, येन-केन प्रकारेण सफलता और असीमित मौज-मस्ती ही नैतिकता है।

वैश्वीकरण धीरे-धीरे जनतंत्र को खोखला करता जा रहा है वह आदमी को स्वकेंद्रित, आत्मविहीन और तमाशा बना रहा है वैश्वीकरण का संचालन विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा होता है। विश्व गाँव बनाने के लिए अमेरिका का वैश्वीकरण करना चाहते है।

'राष्ट्रीयता' और 'वैश्विकता' के रिश्ते में धुंधलापन आता है वैश्वीकरण स्थानीयताओं को उकसा रहा है, पर राष्ट्रीयता और देश की सीमाओं को मिटा देना चाहता है। राष्ट्रीय सरकार औपचारिक अस्तित्व रखें, सीमाओं की सुरक्षा का भार भी जैसे बहुराष्ट्रीय कंपनियों को दे दिया जाय।

वैश्वीकरण भारत में विश्व बाजार की एक से बढ़कर एक आधुनिक उपभोक्तावादी स्तनों के बीच वस्तु नैतिक अराजकता और कूपमंडूकता उभार रहा है। वह आदमी को एकसाथ भूखंड और बर्बर दोनों बना रहा है। सन् 1990 से वैश्वीकरण, निजीकरण और बाजारवाद ने सारी दुनिया को मुट्ठी में कैद किया है। एल.पी.जी.ने साहित्य और समाज को पूरी तरह से प्रभावित किया है आज मनुष्य का कोई मूल्य नही रहा। रिश्तों में गिरावट, ठंडापन आ गया है। मनुष्य अब मनुष्य नहीं बल्कि चीज बन गया है विज्ञापन देने के लिए ऐसी लड़की चाहिए जो जवान हो और जब चाहे तब वह अंग प्रदर्शन कर सके। मनुष्य के पास अब सोचने के लिए समय नहीं है। चिंतन-मनन करने के लिए मनुष्य ने अपने दिमाग के दरवाजे बन्द कर दिये है। हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये है विज्ञापन हो या न्यूज चैनलों पर स्त्री चाहिए। अधिक प्रौढ़ औरत को यहाँ पर काम नहीं मिलता। खूली अर्थव्यवस्था ने बाजारीकरण को सर्वाधिक महत्व दिया। 'बाजार' में नैतिक मूल्य को कोई जगह नहीं रहती। आज हम देखते हैं कि परिवार में भी हर सदस्य अपना फायदा देखता है और उसी तरह सोचता भी है। पति-पत्नी एक दूसरे को शक की नजर से देखते है। माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा देते समय भी उसका क्या रेट (मूल्य) मिल जायेगा इस बारे में सोचता है। मानो पूरी मानवता चरमरा रही है हर रिश्ता दाँव पर लगा है।

हमारा देश 1947 को आजाद हुआ तब मा. पंडित जवाहर नेहरू जी तथा उनके साथ सत्ता में रहनेवाले लोग समाजवादी थे समाज का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधिओं को कल्याणकारी दृष्टि से देखा और समझा जाता था। लेकिन वैश्वीकरण, निजीकरण और बाजारीकरण ने भांडवलशाही को बढ़ावा दिया। साहित्यकार के लेखन में ही वह क्षमता है जो इन सारी व्यवस्था विरोध कर सके। सच कहे तो यह काम नई पीदि का है लेकिन वह तो इन चीजों में

मग्न है। पर जातक संवेदनशील लेखक खामोश रहकर तमाशाबीन कैसे बन सकता है, सिर्फ लेखक ही वैश्वीकरण, निजीकरण, बाजारीकरण तथा उपभोक्ता संस्कृति के विरोध लड़ सकता है।

वैश्वीकरण का सीधा मतलब है अमेरिका के अधिपत्य में रहना। भारत ने स्वीकार किया है, अमेरिका का वर्चस्व । चारों ओर अगर दृष्टि दौडायी तो दिखाई देगा कि, मल्टी नॅशनल कंपनियों का जाल है। मल्टी नॅशनल कंपनियाँ तय करती है सरकारी आर्थिक नीति। इसीलिए जो अमेरिका की समस्याएँ है वहीं भारत की भी है। इन सारी चीजों को साहित्यकार अपना निशाना बनाता है।

आधुनिकता का अर्थ है ग्लोबलाइजेशन जिसका सम्बन्ध सीधा ब्रिटन के बाजारवाद से है तो उत्तर आधुनिकतावाद अमेरिका की उपज है। आज हम देखते है चाट मसाला, कुकिंग पर अधिक किताबे छप रही है जिसका उपयोग आज बाजार में हो रहा है। परिवार की परिभाषा पूरी तरह तब्दिल की गई है.समलैंगिकता, गैर लैंगिक सम्बन्ध, घटस्फोट, वृदाश्रम, सरोगेट मदर (Surrogate Mother) आदि ने सारे नाते रिश्तों को तहस नहस किया है वैश्वीकरण, निजीकरण, बाजारवाद तथा उपभोक्ता संस्कृति केवल अच्छे मुहावरा है अंदर सबकुछ काला और खोखला है। इस दृष्टि से लेखन हो रहा है इन सभी बिन्दुओं को वैश्वीकरण, भाषा और साहित्य अनुसंधान, को रेखांकित करने की मेरी अपनी समझ है।

उत्तर आधुनिकता व वैश्वीकरण ने शांत देश संस्कृतियों को उद्वेलित कर उनमें संवेगात्मक तुफान पैदा किया है ताकि अपनी चपेट में लेकर उन्हें आधुनिक कलेवर में आसानी से रूपांतरित किया जा सके। पश्चिमी देशों की उपभोक्तावादी संस्कृति ने संवेदना की जगह उत्तेजना, संवेग की जगह फैशन और कलाओं के शांत आचरण की जगह फैशन दिखाने और सौंदर्य की जगह चमक-दमक ने लेली है। आज बाजार में अपने उत्पादों को बेचने के लिए विभिन्न कंपनियों द्वारा विज्ञापनों के नाम पर औरतों के शरीर को उपभोक्ता सामग्री बनाकर बेचने की होड़ लगी हुई है।

उदारीकरण, बाजारीकरण एवं वैश्वीकरण थोडे लोगों के लिए ताकतवर एवं समृध्द हैं, जो कि अधिकांश लोगों के लिए तो यह अंधेरा है।

हिन्दी भाषा विश्व में तीसरी प्रमुख भाषा है। चीनी और अंग्रजी के बाद हिन्दी भाषा को बोलने व समझने वालों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा है। उन्नत विज्ञान और तकनीक किसी भी देश के विकास का मूलाधार हैं। भाषा ही वह सशक्त साधन है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने भावों और विचारों का आदान प्रदान करता है। हिन्दी भारत की आत्मा की वाणी है। वह जनता के हृदय और मन की भाषा के रूप में युगों से राष्ट्र के भावों की अभिव्यक्ति करती चली आ रही है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उत्तरोत्तर विकास से 20वीं शताब्दी में औद्यौगिक क्रांति आई. और अब 21 वीं शताब्दी में सूचना क्रांति हिन्दी एक समृध्द भाषा है उसकी एक वैज्ञानिक लिपि है। हिन्दी में शब्द रचना की प्रकिया वैज्ञानिक हो और उसके पास उपार शब्द-संपदा है।

आज हिन्दी विश्व बाजार की भाषा बनने के लिए पूर्ण समर्थ है। सिनेमा, धारावाहिक, फेसबुक, अंतरताना (इंटरनेट) आदि आधुनिक माध्यमों की यह विश्व बाजार की उपयोगी व महत्वपूर्ण भाषा बन चुकी है। साहित्य को इन सारी चीजों ने अत्यधिक प्रभावित किया है जिस वजह से उसके परिवेश में परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन साहित्य अनुसंधान करने के लिए उकसाता

है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आईबीएम, याहू और ओरेकल जैसी कंपनियों हिन्दी माध्यम से अरबो-खरबो का व्यापार कर रही हैं और प्रयोग को बढ़ावा दे रही है।

जो काम भाषा सम्बंधी संवैधानिक प्रावधान और शासन तंत्र के प्रयास गत छह दशकों में न कर सके वह पहले टेलीविजन या हिन्दी फिल्मों ने बाद में उनके लिए प्रचार के विज्ञापनों या दूसरी मुद्रित सामग्री ने कर डाला।

मुक्त व्यापार व्यवस्था ने श्रव्य-दृश्य मीडिया को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। मनोरंजन उद्योग के अलावा देश की बड़ी से बड़ी विज्ञापन कम्पनियों ने भी इसमें योगदान दिया है। संवैधानिक प्रावधान और सरकारी योजनाएं तथा कार्यालयों सीमा ने भाषा संबंधी प्रयास जो कर नहीं सके वह काम टेलीविजन, हिन्दी सिनेमा, विज्ञापनों और मूद्रित सामग्रीने किया है। सारे देश में आज दृश्य माध्यम का प्रभाव चमत्कृत है। देश भर में होर्डिंग या टीवी चैनलों पर विज्ञापनों द्वारा चौबीस घंटो यह दिल मांगे मोर, बोले मेरे लिप्स' है न कमाल का ठक्कन, जसे कई वापर द्वारा सभी के कानों में पड़ रही है। टीवी के चैनलों पर बतायें जाने वाले सीरियल, कम या पाप एलबम, विज्ञापन या रियालीटी शो जाने अनजाने हिन्दी भाषा का ही प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

आज अंग्रेजी का रूप हिन्दी की मिली जुली खिचडी भाषा का रोमन लिपि में एक समर्थ के रूप में खड़ा है। अब तो अंग्रेजी के प्रमुख दैनिक पत्रों में हर पृष्ठ पर रोमन लिपि में लेखों के शीर्षक भी हो सकते हैं- "तोल मोल के बोल" (सन्डे आब्जर्वर) तो यह आर्ट-शार्ट क्या है?" (संडे मिड्डे, "बार बार देखो') (संडे मिड्डे) आदि। आज कहीं क्षेत्रों में अनगिनत होर्डिंगों द्वारा जैसे हिन्दी के शब्दों को रोमन लिपि में सिखाया जा रहा है।

राजेश जोशी ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के चंगुल में फंसे भारतीयों का चित्रण किया है

बहुराष्ट्रीय कंपनी की गुदगुदी का मजा ही कुछ और है। शाम तो पीटर इंग्लैंड या पॉन अमेरिका की कमीज पहनकर। घुसता हूँ एक फास्ट फुड कॉर्नर में । और केंटुकी चिकन माँगता हूँ। पीठ के पीछे खड़ा एक सेल्समान पूछता है। कौन सी शेविंग क्रीम इस्तेमाल करते हैं आप? वैश्वीकरण द्वारा निर्मित बाजारवाद ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। मैंने अब बाजारवाद का एक खिलौना है। वैश्वीकरण के बाजारवाद ने स्त्री के देह को आयात-निर्यात की मंडी बनाया है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय साहित्य के संपूर्ण भाषाई परिदृश्य में स्त्री विमर्श ने लगातार उंचाई और नई दृष्टि प्राप्त की है। आज की हिन्दी कहानी में न नीर भरी बदली का शोकगीत है और न अबला जीवन पर हाहाकारी विलाप है। नए दौर की कहानीकारों के कहानियों में स्त्री विमर्श को स्त्री मुक्ति का विस्तार है। इन तमाम कहानीकारों में चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा, ऋता शुक्ल, ममता कालिया, मेहरूनिसा परवेज, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, राजी सेठ, अलका सरावगी, गीतांजलि, जया जादवानी, मधु कांकरिया, अनामिका आदि। भारतीय और वैश्वीक समाज में स्त्रियों के नित नए बदलते स्वरूपों और हितों को हिन्दी की समकालीन कथा लेखिकाओं ने विस्मकारी साहस के साथ प्रस्तुत किया है। कथा साहित्यः अनुसंधान के विविध आयाम की माँग करता है।

वैश्वीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति ने हिन्दी को भी प्रभावित किया है। आज हिन्दी में ऐसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय शब्द प्रचलित हो गए हैं जिनकी विश्वस्तर पर उपयोगिता है। आज उपभोक्ताओं की रूचि को ध्यान में रखकर साहित्य लिखा जा रहा है। वैश्वीकरण के नाम पर हिन्दी का व्यवहार माल की अधिक खपत के लिये हो रहा है। एक अरब से अधिक जनसंख्या वाले इस विशाल देश में हिन्दी को रोमन में लिखकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा वैश्वीकरण के बुत में पहुँचाने का दावा किया जा रहा है।

आज हिन्दी साहित्य लेखन में वैश्वीकरण के अच्छे और बुरे प्रभाव की चर्चा हो रही है। आज मनुष्य के कई सपने साकार तो हो रहे हैं लेकिन उसका सह और निजह कहीं खो गया। साहित्य में इसी खोये हुये व्यक्तित्व की तलाश प्रतिमानों और बिम्बों के आधार पर की जा रही है

इन ओढे हुये मुखौटो पर संशय,
यह महज औपचारिकता, यह अभिनय,
जीविका हेतु यांत्रिकी व्यवस्तताएं,
अपराध पतन या नैत्रिक हत्याएँ.
नारे, सभा, जुलूस, प्रदर्शन-बोध,
त्रस्त, तनाव, यह उत्पीड़न युग-बोध।

आज वैश्वीकरण के युग में साहित्य पूर्णतः यथार्थवादी हो गया है। मूल्यवादी मान्यताओं एवं परंपराओं को तोड़कर पाश्चात्य प्रभाव से मानव मूल्यों को मरोड दिया गया है। वर्तमान युग में आधुनिकता बोध का आशय आधुनिक संवेदना से है जो नैतिकता की खोज मानव संभूतनत से करती है। आधुनिकता येरोप अथवा अमेरिका को आदर्श मानकर वहाँ के ही भाव तह को भारतीय परिवेश में उपस्थित करना नहीं है बल्कि जनता के लिये साहित्य की रचना करना है।

आज के अर्थ युग में जीवन को व्यापार मानने और अपनी-अपनी दुकानदारी सजाने संवारने में सब संलग्न है। वैश्वीकरण के युग में बढ़ते बाजारवाद के कारण साहित्य ने जो करवट बदली है उस पर चिंतन करते हुये मधुकर गौड़लिखते है

खुल गई अलग-अलग दुकानदारियाँ
सेने सरीखी अब कहा साहित्यकार का।
घर पर ही छोड़ आइये अब स्वाभिमान को,
जितना भी वीके, बेचिये अपने ईमान को।

वैश्वीकरण का प्रभाव आज प्रत्येक क्षेत्र में स्पष्ट दिखाई दे रहा है समाज, सस्कृति, भाषा, साहित्य भी इससे अछते नहीं है। साहित्य की प्राचीन परंपरा, धरोहर और भव्यता को भुलकर नये आयाम की तलाश साहित्य ने वैश्वीकरण के इस युग में नई भाषा का अन्वेषण भी किया है।

आधुनिक युग विज्ञान और तकनीकी का है। इसमें मानव की प्रगति की बहुत आवश्यकता है। हिन्दी में विज्ञान और तकनीकी के साहित्य को बहुत बड़े पैमाने पर बढ़ाना चाहिए। शब्द को तो हमारा देश ब्रह्म मानता है ऐसे ही हिन्दी को व्यापक बनना होगा। हिन्दी में नवीन विचार, मानव समस्याएँ, ज्ञान एवं मनुष्य के दुःख दर्द का साहित्य निर्माण होना चाहिए ताकि लोगों को उससे संतुष्टि और अपनापन दिखे। आज वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी ने विश्व - मैत्री स्थापन की है।

वैश्वीकरण का हमारी सामाजिक, आर्थिक तथा भाषा-संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हिन्दी भाषा की नई दिशाओं और साहित्य की अत्याधुनिक प्रवृत्तियों पर भी इसका सीधा प्रभाव लक्षित होता है वैश्वीकरण, निजीकरण, बाजारवाद तथा उपभोक्तावादी संस्कृति में भाषा और साहित्य का मूल्यांकन भी उनकी उपयोगिता की दृष्टि से, बाजार की दृष्टि से होने लगा है। अब हिन्दी भाषा पहले जैसे नहीं रह गई है। हिन्दी भाषा पर भूमंडलीकरण की उपभोक्ता संस्कृति के प्रभाव का ही यह परिणाम है कि उसकी शब्दावली और वाक्य योजना में अंतर्राष्ट्रीय विषयों का निरन्तर समावेश होता जा रहा है। कितने ही ऐसे शब्द अब केवल कोश तक सिमट कर रह गए हैं, जिनका सम्बन्ध मनुष्य और उसकी शाश्वत संवेदनाओं से रहा है। आज की हिन्दी में ऐसे शब्दों कि बहुत बड़ी संख्या है जिनकी अंतर्राष्ट्रिय बाजार में आज उपयोगिता है वही साहित्य भी लिखा जा रहा है, जो उपभोक्ताओं को पसंद आता है।

अतः वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप ऐसे सांस्कृतिक स्खलनों का चरम रूप हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अंकित हो रहा है और कहीं कोई विरोध नहीं होता। हिन्दी साहित्य में अपसंस्कृति का प्रसार वैश्वीकरण का परिणाम है। आज का हिन्दी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के संपर्क से से वैश्वीकरण की व्यापकता का लाभ उठा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में हम हिन्दी भाषा और साहित्य की अपनी आधारभूत प्रकृति और संरचना की सुरक्षा और वैश्वीकरण के सद्गुणों से लाभान्वित हो और दुष्प्रभावों का निषेध और विरोध करें। तभी हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ वैश्वीकरण की अवधारणा का वास्तविक सम्बन्ध स्थापित हो सकेगा |

## संदर्भ

१. इस्पात भाषा भारती, स्टील, अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, वर्ष-८ अंक-३७, जून-सितम्बर २०१३ पृ०७

२ इस्पात भाषा भरती, स्टील अथाफरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, वर्ष-२५ पूर्णांक: ७२ जनवरी-मार्च २००३ - कंप्यूटर अनुवाद और हिन्दी, डॉ० अमर सिंह वधान पृष्ठ७

३. इस्पात भाषा भारती, स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, अप्रैल -मई २०१४, वर्ष-६, अंक ४० भारतीय भाषाओं में स्त्री कहानीकारों का वर्तमान डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी पृष्ठ ३१

४. इस्पात भाषा भारती, स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, अप्रैल -मई २०१४, वर्ष-६ भूमंडलीकरण एवं नई प्रौद्योगिकी व भाषाएँ- व्यास नारायण दुबे पृ२६,२७

५. मीडिया लेखन सिद्धान्त और व्यवहार- डॉ चन्द्र प्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन दिल्ली. द्वितीय संस्करण -२००३ Reprint 2010

६. हिन्दी संघर्ष और आयाम : संपादक डॉ० श्रीमती, जयश्री शुक्ला, डॉ० श्रीमती, राजेश चतुर्वेदी- वैश्वीकरण एवं हिन्दी भाषा साहित्य डॉ० कल्याणी जैन, पृ० १०३,१०४,१०५

७. हिन्दी संघर्ष और आयामः भूण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी - डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय राकेश' पृष्ठ २५३, २५४, २५५